इसलिए खास हैं ये

आईटीए पुरस्कार: बैस्ट स्क्रीनप्ले 'वो रहने वाली महलों की.'

राजस्थान गौरव पुरस्कार: 'दीया और बाती हम.'

आईटीए पुरस्कार: 'दीया और बाती हम.'

बिग स्टार: 'दीया और बाती हम.'

स्टार गिल्ड अप्सरा अवार्ड: 'दीया और बाती हम.'

शशि मित्तल

निर्माता व लेखिका

"टीवी प्रोडक्शन में महिलाएं ही सफल हैं. हर चैनल में ज्यादातर महिलाएं ही होती हैं. अगर आप में जज्बा और लगन है तो आप यकीनन आगे बढ़ेंगी."

छोटे परदे पर अपनी अलग पहचान बनाने वाली प्रोड्यूसर शशि मित्तल गुजरात के अहमदाबाद की हैं. व्यवसायी परिवार में पैदा हुईं शशि के पति सुमित मित्तल को फिल्मों में अभिनय का शौक था. शादी के कुछ सालों बाद दोनों इसी वजह से मुंबई आ गए. मगर जब पता चला कि बिना गौडफादर के अभिनय के क्षेत्र में आना मुमकिन नहीं तो शशि ने अपनी राइटिंग की तरफ ध्यान दिया.

'जमीन से आसमान तक' धारावाहिक की वे सहायक राइटर रहीं. उस के बाद 'वो रहने वाली महलों की' में स्वतंत्र लेखिका के रूप में काम किया, जिस के लिए उन्हें पुरस्कार भी मिला. 'सिंदूर' धारावाहिक की वे सहायक राइटर रहीं. 'सिंदूर' धारावाहिक भी उन्हीं का लिखा है.

जब शशि मित्तल ने स्टार प्लस को 'सजन घर जाना है' की कहानी सुनाई तो वहां के क्रिएटिव हैड ने तुरंत हां कह प्रोडक्शन के लिए आमंत्रित कर लिया. बंकिमचंद्र की 'देवी चौधराइन' कहानी पर आधारित यह धारावाहिक अच्छा चला और फिर यहीं से शुरू हुआ उन का प्रोडक्शन का सिलसिला.

हंसमुख स्वभाव की शशि से उन के प्रोडक्शन हाउस में मिलना हुआ. पेश हैं, उस दौरान उन से गुफ्तगू के प्रमुख अंश:

इस क्षेत्र में आने के बाद कितनी चुनौती थी?

चुनौती से अधिक डर था. पहले जब राइटिंग में थी तो ऐपिसोड लिखने के बाद काम खत्म हो जाता था. यहां जिम्मेदारी अधिक थी. ऐसे में मैं ने और मेरे पति ने अपनाअपना काम बांट लिया. मैं ज्यादातर क्रिएटिव क्षेत्र को देखती हूं. बाकी काम वे संभाल लेते हैं.

काम के साथसाथ परिवार की देखभाल कैसे करती हैं?

काम के साथसाथ बच्चों की पढ़ाईलिखाई, उन की देखरेख पर भी पूरापूरा ध्यान देती हूं. मैं रविवार को काम नहीं करती. पूरा समय बच्चों के लिए होता है. पति भी बहुत सहयोग देते हैं.

महिला होने की वजह से इस क्षेत्र में परेशानी भी आई?

टीवी प्रोडक्शन में महिलाएं सफल हैं. यहां पुरुष अधिक मायूस होते हैं. अगर आप में प्रतिभा और काम करने की लगन है तो आप यकीनन आगे बढ़ेंगी. जैसा कि लोग कहते हैं कि इस क्षेत्र में धोखा है, तो उस का मैं ने कभी सामना नहीं किया. मेरी कामयाबी में राजश्री प्रोडक्शन के राजकुमार बड़जात्या और सूरज बड़जात्या का काफी सहयोग है.

किस तरह की कहानियों को परदे पर दिखाना पसंद करती हैं?

मेरी हमेशा परदे पर समाज की गलत बातों को दिखा कर दर्शकों को सचेत करने की कोशिश रहती है. 'दीया और बाती हम' की अवधारणा यह थी कि जिस प्रकार एक पुरुष की सफलता के पीछे महिला होती है उसी प्रकार एक महिला की सफलता के पीछे भी पुरुष हो सकता है. 'पुनर्विवाह' की कहानी भी वैसी ही है. उस में एक लड़की को दूसरी शादी करने के अधिकार के बारे में बताया गया है. मैं हमेशा छिपा संदेश देने की कोशिश करती हूं.

आप का बैस्ट अचीवमैंट क्या है?

धारावाहिक 'दीया और बाती हम' की सफलता ही मेरा बेस्ट अचीवमैंट है. इस से मुझे पहचान मिली. सही निर्देशक, सही अभिनेता और अभिनेत्री का समय पर मिलना चुनौती होती है. अगर ये समय पर मिल जाए तो काम अच्छा होता है.

खाली समय में क्या करती हैं?

किताबें पढ़ती हूं. जिम जाती हूं. फैशनेबल नहीं हूं. चाट खाना पसंद करती हूं. **-प्रतिनिधि**